IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 01, 2022

राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिभावकों की शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

डॉ. ममता बंसल, एसोसिएट प्रोफेसर, सूरतगढ़ बी.एड. कॉलेज, सूरतगढ़, जिला श्रीगंगानगर (राज.)

सारांश :–

प्रस्तुत शोध में शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया। किसी भी बालक के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा की गुणवत्ता महत्वपूर्ण है। शोध के तीन प्रमुख उद्देश्य है, जिनमें राजकीय विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति, ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति व शहरी क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध में 60 का न्यादर्श लेकर स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग करके सांख्यिकी विधियों का उपयोग किया जाकर यह निष्कर्ष प्राप्त किया गया कि राजकीय विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।

प्रस्तावना :–

आज का बालक कल का राष्ट्र निर्माता है। शिक्षा द्वारा विद्यार्थी अपनी आंतरिक क्षमता को पहचान पाता है और राष्ट्र निर्माण में सार्थक भूमिका का निर्वाह कर पाता है। शिक्षा क्रम विद्यार्थी की बौद्धिक, शारीरिक एवं भावनात्मक शक्तियों को विकसित करने वाला होना चाहिए। शिक्षा सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक पक्षों द्वारा प्रभावित एवं संचालित होती है। इसी के अनुसार शिक्षा में लचीलापन एवं गतिशीलता होनी चाहिए। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा की शिक्षा, शिक्षण अधिगम स्थितियाँ, मूल्यांकन की सुनिर्धारित प्रक्रिया आदि भी शिक्षा की गुणवत्ता की ओर महत्वपूर्ण कदम है। शिक्षा विज्ञान, उद्योग और तकनीकी विकास के लिए बालक को तैयार करे।

शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण दायित्व है विद्यार्थी को मूल्यों की शिक्षा देना। मूल्यों के हास के इस युग में मूल्यों की शिक्षा की आवश्यकता और बढ़ गई है। शिक्षा में गुणात्मक मात्रा पाठ्यक्रम से संभव नहीं है। पाठ्यक्रम की आत्मा को शिक्षण विधियों के प्रभावी उपयोग द्वारा आत्मसात् करवाने में भी निहित है। शिक्षा का प्रबन्धन अपने आप में कम महत्वपूर्ण नहीं है। शिक्षा की पूर्ण प्रक्रिया तब तक सफल नहीं हो सकती। जब तक सुचारु प्रबन्धन द्वारा उसे निबद्ध न किया जाए। इसके लिए क्रियान्वयन की शैली, प्रबन्धन की संस्कृति भी विकसित की जानी चाहिए।

शिक्षा विद्यार्थी में साम्प्रदायिक सौहार्द पैदा करें, कार्य जगत और ज्ञान जगत की खाई को दूर करे। राष्ट्र निर्माण, पर्यावरण संचेतना, ज्ञान का स्त्रोत, राष्ट्र की अखण्डता तथा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनना सिखाने वाली ही सच्ची शिक्षा है। शिक्षा मानव मात्र के सशक्तिकरण के लिए होनी चाहिए।

समस्या कथन :–

"राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिभावकों की शिक्षा की गुणवता के प्रति अनिवृति का अध्ययन"

शोध की आवश्यकता एवं महत्व :–

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

शिक्षा की गुणवत्ता भी आवश्यक एवं समय सापेक्ष है। हर युग के अनुसार समय की आवश्यकता परिवर्तित होती रहती है। शिक्षा में शाष्वत मूल्यों के अतिरिक्त वह जीवनोपयोगी हो, यह भी आवश्यक है। शिक्षा को कार्य तथा रोजगार उन्मुख बनाया जाना भी आवश्यक है।

शिक्षा द्वारा हमें वैष्विक उद्देश्यों को प्राप्त करना है, राष्ट्रीय परम्परा के अनुसार सांस्कृतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करना, बालक का सर्वांगीण विकास करना, भारत के संविधान में उल्लेखित मूल्यों को प्राप्त करना तथा देश की भावनात्मक एकता को अक्षुण्ण बनाए रखना है। वर्तमान समस्याओं के प्रति संलग्नता तथा भविष्य के लिए तैयारी शिक्षा के गुणात्मक पक्ष के लिए अनिवार्य है। सांस्कृतिक संचेतना, सृजनात्मकता, सामाजिक एवं पर्यावरणीय सरोकारों में राष्ट्रीय विकास के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को समावेश के लिए भी शिक्षा में समुचित प्रावधान होना आवश्यक है।

राष्ट्रीयता का गौरव उत्पन्न करना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, कला एवं सृजनात्मकता के प्रति रुझान, सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग, कार्य जगत एवं ज्ञान जगत की दूरी कम कर, मूल्यों की शिक्षा, पर्यावरण, संसाधन, जनसंख्या एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी संचेतना उत्पन्न करना तथा वैष्विक सरोकारों के प्रति जागरुक रहना शिक्षा में गुणात्मकता के लिए महत्वपूर्ण है।

शोध के उद्देश्य :–

शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं :–

1. राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिभावकों की शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

2. ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिभावकों की शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

3. शहरी क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिभावकों की शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ :–

शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई हैं :–

1. राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के अभिभावकों की शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अभिवृत्ति सामान्य स्तर की है।

2. राजकीय विद्यालय के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के अभिभावकों की शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अभिवृत्ति सामान्य स्तर की है।

3. राजकीय विद्यालय के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के अभिभावकों की शिक्षा की गुणवता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध में प्रयुक्त विधि :–

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श :–

जब किसी जनसंख्या में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी इकाइयों को चुना जाता है, तो इस चुनने की क्रिया को न्यादर्श कहते हैं। न्यादर्श समष्टि का वह अंश होता है, जिसमें अपनी समष्टि की समस्त विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिबिम्ब रहता है।

1. प्रस्तुत शोध में राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के 60 अभिभावकों का चयन किया गया है।

2. प्रस्तुत शोध में ग्रामीण क्षेत्र के 30 अभिभावकों का चयन किया गया है।

3. प्रस्तुत शोध में शहरी क्षेत्र के 30 अभिभावकों का चयन किया गया है।

उपकरण :–

प्रस्तुत शोध में दत्तों का संकलन करने के लिए शोधकीं द्वारा स्वयं निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

1. मध्यमान

2 प्रमाप – विचलन

3. टी–मूल्य

विश्लेषण :–

''राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिभावकों की शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अभिवृत्ति को दर्शाती सारणी''

सारणी संख्या 1

अंक	आवृत्ति	प्रतिशत अंक	मध्यमान	अभिवृत्ति का स्तर	परिणाम
0–4	02	04		अति निम्न	
5–9	10	20	13.18	निम्न	सामान्य
10–14	25	50		सामान्य	
15–19	09	18		उच्च	
20–24	06	12		अति उच्च	

उपरोक्त सारणी में राजकीय विद्यालयों में शिक्षा की गुणवता के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति के अंको का सांख्यिकीय विश्लेषण के अन्तर्गत मध्यमान व प्रतिशत प्रस्तुत की गई है। मध्यमान 13.18 प्राप्त हुआ है तथा सबसे अधिक प्रतिशत वाली आवृत्ति वाली अंकों का वर्गान्तर 10–14 है, जो सामान्य स्तर को इंगित करती है। इस आधार पर स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति सामान्य स्तर की है।

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

''शहरी क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिभावकों की शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अभिवृत्ति को दर्शाती सारणी''

सारणी संख्या 2

अंक	आवृत्ति	प्रतिशत अंक	मध्यमान	अभिवृत्ति का स्तर	परिणाम
0–4	01	02		अति निम्न	
5–9	06	08		निम्न	
10–14	14	28	12.80	सामान्य	सामान्य
15–19	05	16		उच्च	
20–24	02	04		अति उच्च	

उपरोक्त सारणी में शहरी क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति के अंकों को सांख्यिकीय विश्लेषण के अन्तर्गत मध्यमान व प्रतिशत प्रस्तुत की गई है। मध्यमान 12.80 प्राप्त हुआ है तथा सबसे अधिक प्रतिशत वाली आवृत्ति वाली अंकों का वर्गान्तर 10–14 है, जो सामान्य स्तर को इंगित करती है। इस आधार पर स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति सामान्य रतर की है।

''ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिभावकों की शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अभिवृत्ति को दर्शाती सारणी''

सारणी संख्या 3

अंक	आवृत्ति	प्रतिशत अंक	मध्यमान	अभिवृत्ति का स्तर	परिणाम
0–4	01	02		अति निम्न	
5–9	04	08		निम्न	
10–14	11	22	12.72	सामान्य	सामान्य
15–19	04	08		उच्च	
20–24	04	08		अति उच्च	

उपरोक्त सारणी में ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति के अंकों को सांख्यिकीय विश्लेषण के अन्तर्गत मध्यमान व प्रतिशत प्रस्तुत की गई है। मध्यमान 12.72 प्राप्त हुआ है तथा सबसे अधिक प्रतिशत वाली आवृत्ति वाली अंकों का वर्गान्तर 10–14 है. जो सामान्य स्तर को इंगित करती है। इस आधार पर स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति सामान्य स्तर की है।

निष्कर्ष :–

1. राजकीय विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अभिभावकों की आवृत्ति सामान्य स्तर की है।

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

2. शहरी क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति सामान्य स्तर की है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कपिल, एच. के. (2008) ''अनुसंधान विधियाँ'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा – 2

2. भटनागर, आर.पी. भटनागर मीनाक्षी (2007) ''अनुसंधान विधियाँ'' लाल बुक डिपो, मेरठ

3. शर्मा, आर. ए. (2008) ''शिक्षा अनुसंधान'' आर. लाल बुक डिपो, मेरठ

4. हंसराज, कपिल (2007) ''सांख्यिकी के मूल तत्व'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

5. श्रीवास्तव, डी. एन. ''अनुसंधान विधियाँ'' अग्रवाल प्रकाशन, आगरा–1